'सेवा' बैंक

एक सफल प्रयास

जुही जैन

क्या कोई बैंक ग़रीब, अनपढ़ औरतों को कर्ज़ देकर मुनाफा कमा सकता है? जवाब मिलेगा नहीं, बिल्कुल नहीं। ग़रीब औरतें कर्ज़ा वापस कहां से करेंगी? क्या गारंटी है कि कर्ज़ा वापस आएगा ही? फिर बैंक की रोज़मर्रा की लिखा-पढ़ी उनके बस की नहीं है।

पर यह सही नहीं है। अहमदाबाद के महिला सेवा सहकारी बैंक ने कुछ ऐसा ही किया है। यह बैंक केवल ग़रीब, अनपढ़ और स्वरोज़गार में लगी औरतों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर शुरु किया गया था। और इस बैंक ने काफी मुनाफा भी कमाया है। और तो और इस बैंक से कर्ज़ा लेने वालों में से नब्बे प्रतिशत लोगों ने इसे वापस भी कर दिया है।

अपनी आय, अपना बैंक

सेवा बैंक, सेवा संस्था का एक अहम हिस्सा है। सेवा संस्था 1972 में रजिस्टर की गई थी। इसकी सदस्याएं बीड़ी बनाने वाली, छोटे घरेलू धंधे चलाने वाली, सब्जी बेचने वाली, बोझा ढोने वाले, रद्दी कागज इकट्ठे करने वाली औरतें हैं। इनमें से ज्यादातर औरतों के पास अपना रोज़गार चलाने के लिए पूरे साधन नहीं थे। इस वजह से उन्हें महाजन से उधार लेना पड़ता था। कभी-कभी उन्हें उधार की रकम पर दस प्रतिशत ब्याज तक देना पड़ता था। बिचौलियों और महाजनों के चंगुल में एक बार फंसने के बाद निकल पाना मुश्किल ही नहीं असंभव भी होता था।

क्यों और कैसे?

सरकारी बैंकों से भी इन ग़रीब-मजदूर औरतों को मदद नहीं मिल पाती थी। ग़रीब कर्जा लेने के लिए गारंटी कहां से लाएं। उन पर बाबुओं की बेरुखी। उन्हें तो पढ़े- लिखे, मध्यम वर्ग के लोगों का काम करने की आदत है। उनके सामने इस ग़रीब जनता की कौन सुने। औरतों को भी कठिनाई। काम देखें, या बैंक जाकर माथापच्ची, मनुहार करें। फिर पैसा शराबी पति और बच्चों से बचाकर रखें तो कैसे। बैंक में उनकी मदद कौन करे।

इस तकलीफ को देखते हुए सेवा की सदस्याओं ने तय किया अपना बैंक खोलेंगे। सरकारी बैंक हमारी ज़रूरत पूरी नहीं करते। बस चार हजार औरतें इकट्ठी हो गईं। दस-दस रुपए जोड़े। चूंकि ज्यादा औरतें अनपढ़ थीं, इसलिए पहचान के लिए दस्तखत की जगह फोटो लगाई गई। यहां तक कि जब औरतों को मालूम चला कि बैंक रजिस्टर करने के लिए दस्तखत करना ज़रूरी है, तो पूरी रात लग कर ग्यारह औरतों ने अपना नाम लिखना सीखा।

यह राह नहीं आसान

शुरु में यह बैंक सरकारी बैंक और औरतों के बीच बिचौलिए का काम करती थी। अपनी रकम की गारंटी पर सरकारी बैंक से कर्ज़ा दिलाती थी। 1976 में इस बैंक ने अपनी जमा रकम से कर्ज़ देना शुरु किया। पर कुछ ही दिनों बाद बैंक को एक भारी समस्या का सामना करना पड़ा। सरकार ने ग़रीबों के लिए कर्ज़ा वापस न करने की घोषणा कर दी। हालांकि यह योजना केवल महाजनों पर लागू थी। फिर भी सभी ने इसका गलत अर्थ लगाया। राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ताओं ने औरतों को भड़काना शुरु किया। कर्ज़ा वापस नहीं करो। इससे औरतें सेवा बैंक को शक की नज़र से देखने लगीं। सेवा बैंक ने इस समय कर्ज़ देना बंद कर दिया था। ऐसा लगा कि बैंक बंद करना पड़ेगा। पर हिम्मत और मेहनत से सब ठीक हो गया।

मुश्किलें आसान हुईं

आज यह बैंक अपने किस्म का अनूठा है। इसके बोर्ड में हर तबके की कामगार औरतें हैं। शमीबेन कांजीभाई रद्दी कागज इकट्ठे करती है। आनंदीबेन सब्जी बेचती है, तो मनीबेन बोझा ढोती है। जयश्री व्यास इसकी प्रबंधक डायरेक्टर है। उनका कहना है कि "इस बैंक की यह सभी सदस्याएं अब हमसे ज्यादा होशियार हो गई हैं। पता ही नहीं चलता कि यह बिलकुल पढ़ी नहीं हैं।"

बैंक का सभी काम मिलकर किया जाता है। स्टाफ भी बदल-बदल कर काम करता है। कुछ सदस्याएं बैंक चलाती हैं, कुछ बैंक के बारे में गांव-गांव जाकर बताती हैं। कर्ज़ा देने का फैसला भी समूह मिल-जुलकर तय करता है। इसके अलावा कर्ज़ लेने वालों को कच्चा माल खरीदने, औजार खरीदने, माल बेचने आदि में भी सदस्याएं मदद करती हैं।

इसका मतलब यह नहीं कि यहां सब कुछ आसान है। बैंक को परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। कई दफा औरतें कर्ज़ा वापस आसानी से नहीं कर पाती। कारण बहुतेरे हैं। घर-परिवार में हारी-बीमारी, अनियमित आय, पुलिस और नगरपालिका के अधिकारियों की ज्यादतियां, सामाजिक रस्मों-रिवाज पर खर्च आदि। इसके अलावा गुजरात में पड़ने वाला सूखा हो, या मिलों का बंद होना हो, या फिर साम्प्रदायिक तनाव हो, सभी का असर औरत पर सीधा पड़ता है। इसलिए घर चलाने के लिए मजबूरन समझौता करना पड़ता है।

आगे की सोच

सेवा बैंक ने इस धारणा को तोड़ा है कि ग़रीबों के लिए बैंक और कर्ज़ की व्यवस्था होने में नफा नहीं है। इस बैंक ने ग़रीब औरतों को देश के आर्थिक विकास में सहायक हिस्सेदार बनाया है। अक्सर देखा गया है कि औरतें अपनी आय का ज्यादातर हिस्सा अपने परिवार के खान-पान, रहन-सहन, पढ़ाई, रोजगार आदि पर खर्च करती हैं। इन औरतों को अपनी आमदनी पर नियंत्रण हासिल करने में मदद करना, अपनी जिंदगी पर हक़ और नियंत्रण हासिल करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। □